20

आश्चर्यकर्मों का तीसरा समूह

(9:18-38)

इस शृंखला में आगे आश्चर्यकर्मों का तीसरा और अन्तिम सैट आता है (9:18-34)। पिछले दो सैटों की तरह इस सैट में भी तीन अलग अलग कहानियां हैं। डग्लस आर. ए. हेयर, अवलोकन है:

> तीनों कहानियां ''दोहरे आश्चर्यकर्म'' हैं। पहली में लहू बहने वाली स्त्री की चंगाई के साथ एक मृत लड़की को जिलाने की बात मिलती है [9:18-26], दूसरी में *दो* अंधों को आंखें देने की बात है [9:27-31], और तीसरी कहानी दोहरी पीड़ा वाले मरीज [गूंगा] की है, जिसमें दुष्टात्मा थी [9:32-34]।[1]

इन कहानियों में विश्वास सब में पाया जाता है। आराधनालय के अधिकारी और लहू बहने वाली स्त्री का विश्वास (9:18, 20-22), दो अंधों का विश्वास (9:27-29), और भीड़ का विश्वास जिसने दुष्टात्माओं से पीड़ित की चंगाई देखी (9:32, 33)।[2]

लहू बहने वाली स्त्री की चंगाई और याईर की बेटी को जिलाना (9:18-26)

[18]वह उनसे ये बातें कर ही रहा था, कि देखो, एक सरदार ने आकर उसे प्रणाम किया और कहा, ''मेरी पुत्री अभी मरी है, परन्तु चलकर अपना हाथ उस पर रख तो वह जीवित हो जाएगी।'' [19]यीशु उठकर अपने चेलों समेत उसके पीछे हो लिया।

[20]और देखो, एक स्त्री ने जिसको बारह वर्ष से लोहू बहने का रोग था, पीछे से आकर उसके वस्त्र के आंचल को छू लिया। [21]क्योंकि वह अपने मन में कहती थी ''यदि मैं उसके वस्त्र को ही छू लूंगी तो चंगी हो जाऊंगी।'' [22]यीशु ने फिरकर उसे देखा, और कहा, ''पुत्री, ढाढ़स बांध, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।'' अतः वह स्त्री उसी घड़ी चंगी हो गई।

[23]जब यीशु उस सरदार के घर में पहुंचा, और बांसली बजाने वालों और भीड़ को हुल्लड़ मचाते देखा, [24]तब कहा, ''हट जाओ, लड़की मरी नहीं, पर सोती है।'' इस पर वे उसकी हंसी करने लगे। [25]परन्तु जब भीड़ निकाल दी गई, तो उसने भीतर जाकर लड़की का हाथ पकड़ा, और वह जी उठी। [26]और इस बात की चर्चा उस सारे देश में फैल गई।

यह जटिल कहानी स्त्रियों और बच्चों के लिए यीशु की करूणा को दिखाती है, जिन्हें पहली सदी के यहूदी समाज में आम तौर पर उपेक्षा की जाती है। इस कहानी का मत्ती का वृत्तांत

सुसमाचार के अन्य सहदर्शी वृत्तांतों से संक्षिप्त है। मरकुस की इस कहानी को तेईस आयतें दी गई हैं (मरकुस 5:21-43); लूका में इसे सत्रह आयतों में बताया गया है (लूका 8:40-56), परन्तु मत्ती ने इसे केवल नौं आयतें दी गई हैं।

आयत 18. यीशु जब यूहन्ना के चेलों से उपवास के बारे में बात कर रहा था तो आराधनालय के **एक सरदार ने आकर उसे प्रणाम किया और कहा**। NASB में सरदार से पहले ''आराधनालय के'' जोड़ा गया है जो शायद मरकुस और लूका के समानांतर विवरणों के आधार पर है। मत्ती ने इस ''सरदार'' (*archōn*) का नाम नहीं दिया, परन्तु लूका ने अपने पाठकों को बताया कि उस आदमी का नाम याईर था और वह ''आराधनालय का सरदार'' था (लूका 8:41; NIV)। मरकुस ने कहा कि याईर ''आराधनालय के सरदारों में से एक'' था (मरकुस 5:22; NIV)। कुछ आराधनालयों में अधिकारियों की बहुसंख्या होती थी जिन्हें प्राचीनों के बड़े समूह में से चुना जाता था।

याईर कफरनहूम के आराधनालय में उच्च पद प्राप्त अधिकारियों में से था। ये लोग आराधनालय की सब गतिविधियों के जिम्मेदार होते थे (4:23 पर टिप्पणियां देखें; 8:5)। इस आदमी ने जो कफरनहूम में प्रसिद्ध और कफरनहूम में सम्मानित व्यक्ति था, विनम्रता से यीशु को ''प्रणाम किया।'' ''प्रणाम किया'' के लिए यूनानी शब्द (*proskuneō*) वही शब्द है जिसका अर्थ ''आराधना'' या ''को आदर देना'' हो सकता है (2:2 पर टिप्पणियां देखें)। इस संदर्भ में बाद वाला अर्थ सही लगता है।

निराशा में याईर ने यीशु को बताया, **''मेरी पुत्री अभी मरी है, परन्तु चलकर अपना हाथ उस पर रख तो वह जीवित हो जाएगी।''** यीशु ने कफरनहूम में आश्चर्यकर्म किए थे जिससे उसका नाम चंगाई देने वाले के रूप में प्रसिद्ध हो गया था। इससे पहले कफरनहूम के पुरनियों ने यीशु से रोमी सूबेदार के सेवक की सहायता करने की याचना की जिसे लकवा हो गया था (8:5 पर टिप्पणियां देखें)। परन्तु तभी से, ग्रंथी और फरीसी यीशु की सेवकाई का विरोध करने लग पड़े थे (9:3, 11)। धार्मिक वशिष्ट वर्ग के सम्भावित विरोध से पूरी तरह अवगत, याईर ने दिल से यीशु की सहायता मांगी।[3]

यह अधिकारी यीशु से उसके घर चलकर उसकी बेटी को जिलाने को कहने के लिए आया था। उसकी चिन्ता की सीमा इस बात में देखी जा सकती है कि उसने यीशु से उसके घर चलने की मिन्नत की (लूका 8:41)। अधिकारी ने कोमलता से उसे ''मेरी छोटी बेटी'' (मरकुस 5:23) कहा। लूका 8:42 के अनुसार, याईर की बेटी ''बारह वर्ष की'' थी और ''वह मरने पर थी।'' परन्तु मत्ती कहता है कि वह पहले ही मर चुकी थी। हम इस अन्तर को कैसे मिलाएं? इस अन्तर को केवल ''वचन [के भाग] के मत्ती के व्यापक रूप में छोटा करने के कारण हो सकता है।''[4] (2) हो सकता है जैसा एच. लियो बोल्स ने सुझाव दिया है कि ''पिता उसे मरते हुए छोड़ आया हो और उसे लगा होगा कि शायद यीशु के पास उसके पहुंचने तक वह मर चुकी हो।''[5] (3) तीसरी सम्भावना की वकालत विलियम हैंड्रिक्स ने की है :

> मरकुस और लूका के अनुसार, याईर ने पहले यीशु को बच्चे को चंगा करने को कहा था; फिर, उसकी मृत्यु का पता चलने पर, प्रभु द्वारा उसे निराश न होने बल्कि विश्वास करने

का आग्रह किया गया था। अब वह अपनी विनती को सुधरे हुए रूप में नये सिरे से इस प्रकार दोहराता है जिससे यीशु मृत लड़की पर यह कहते हुए अपना हाथ रख सके, ''वह जीवित हो जाएगी।''[6]

याईर ने चंगाई देने और यहां तक कि मुर्दे को जिलाने की प्रभु की क्षमता में बड़ा विश्वास दिखाया। यह बहुत बड़ी बात थी क्योंकि जहां तक हमें मालूम है, अपनी सेवकाई में यहां तक यीशु ने किसी मुर्दे को जिलाया नहीं था।

आयत 19. यीशु ने इस आदमी की विनती का जवाब तुरन्त अपने स्थान से उठकर और उस आदमी के घर चलने के द्वारा दिया। **उसके चेले** भी उसके साथ हो चले।

आयतें 20, 21. जब वे याईर के घर की ओर जा रहे थे, तो यीशु के पीछे चलती भीड़ के लोग ''उस पर गिरे पड़ते थे'' (मरकुस 5:24)। इस भीड़ में **एक स्त्री** थी जो चंगाई के यीशु के स्पर्श के लिए तरस रही थी। उसे **बारह वर्ष से लहू बहने का रोग था**। ''लहू बहने का रोग'' के लिए यूनानी शब्द (*haimorroeō*) जो मासिक धर्म की समस्या से सम्बन्धित है, लैव्यव्यवस्था 15:33 में (LXX) भी मिलता है। माइकल जे. विलकिन्स ने लिखा है, ''बहुत भावना इस संकेत की लगती है कि इस स्त्री को मेनोरेजिया अर्थात ऐसा रोग जिसमें मासिक धर्म असामान्य रूप में अधिक देर तक रहता है, जिस कारण खून की कमी भी हो जाती है।''[7]

स्त्री की दुखद स्थिति ने उसकी शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक स्थिति पर प्रभाव डाला। उसने ''बहुत वैद्यों से बड़ा दुख उठाया'' था (मरकुस 5:26) और उनमें से किसी से भी ''चंगी न हो सकी थी'' (लूका 8:43)। ये वैद्य नीम हकीम हो सकते हैं जो बीमार लोगों को लूटते होंगे। इलाज पाने के प्रयास में उसने अपना सब धन खर्च कर दिया था (मरकुस 5:26)।

उसे अपनी समस्या का समाधान नहीं मिला था, जिस कारण वह स्त्री औपचारिक रूप से लगातार अशुद्ध थी-ऐसी अवस्था जिससे उसे अपमान और कठिनाई सहनी पड़ती थी। कोई भी व्यक्ति या वस्तु भी उसे छू जाने पर औपचारिक रूप से वह अशुद्ध हो जाती थी (लैव्यव्यवस्था 15:19-27)। यदि उसकी यह स्थिति उसकी किशोरावस्था से हुई थी तो उससे किसी ने विवाह नहीं किया होगा। यदि उसकी यह हालत विवाह के बाद हुई हो तो उसे और उसके पति के लिए विवाहिक सम्बन्ध बनाना अवैध रहा होगा (लैव्यव्यवस्था 18:19)। जिस कारण वह नि:संतान रही होगी, यानी ऐसी अवस्था जो आम तौर पर तलाक का कारण बनती है। अशुद्ध होने की अपनी अवस्था में वह आराधना के लिए मन्दिर में नहीं जा सकती थी और वह सार्वजनिक स्थानों में नहीं जा सकती। वह हर तरफ से दुखी लाचार स्त्री थी।

यह स्त्री दिखाई नहीं देना चाहती थी, जिस कारण वह यीशु के **पीछे से** आई। उसकी कायर गोपनीयता यीशु के सामने घुटनों के बल झुकने वाले आराधनालय के अधिकारी के साहस के उलट है (9:18)। उसे यह विश्वास करते हुए कि यदि वह **उसके वस्त्र को ही छू** ले **तो चंगी हो जाएगी,** उसे चंगा करने की यीशु की सामर्थ में विश्वास था (देखें 14:36; प्रेरितों 5:15; 19:11, 12)।

उसके वस्त्र का आंचल झालर को कहा गया हो सकता है जो यहूदी पुरुष अपने आपको

याद दिलाने के लिए कि वे परमेश्वर के लोग हैं अपने बाहरी वस्त्रों के ऊपर पहनते थे (गिनती 15:37-41; व्यवस्थाविवरण 22:12; देखें मत्ती 14:36; 23:5)। जब स्त्री ने यीशु के वस्त्र के इस भाग को छूआ, तो ''तुरन्त उसका लोहू बहना बन्द हो गया; और उस ने अपनी देह में जान लिया, कि मैं उस बीमारी से अच्छी हो गई'' (मरकुस 5:29)। स्त्री को चंगाई का अहसास हुआ और यीशु को भी इसका अहसास हुआ। उसने ''तुरन्त अपने में जान लिया, कि मुझ में से सामर्थ निकली है'' (मरकुस 5:30)।

आयत 22. फिर यीशु ने मुड़ते हुए पूछा, शायद तख्ती से, ''मेरा वस्त्र किस ने छूआ?'' (मरकुस 5:30)। भीड़ के दबाव को ध्यान में रखते हुए चेले हैरान थे कि उसने ऐसा सवाल क्यों पूछा (मरकुस 5:31)। उसकी प्रतिक्रिया से वह स्त्री इतनी भयभीत हो गई कि वह ''डरती और कांपती हुई आई, और उसके पांवों पर गिरकर, उस से सब हाल सच सच कह दिया'' (मरकुस 5:33)। बेशक उसे डर था कि एक अशुद्ध स्त्री होने के कारण उसे परमेश्वर के पवित्र जन को जान-बूझकर छूने के लिए सार्वजनिक तमाशा बनाया जाएगा।

यीशु ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा, ''**पुत्री ढाढ़स बांध; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है**।'' ''ढाढ़स बांध'' शब्द हमें यीशु द्वारा पहले अधरंगी से कहे शब्द: ''हे पुत्र, ढढ़ास बांध'' (9:2) का स्मरण कराते हैं। यीशु ने इस सहमी हुई स्त्री को कुछ बहुत ही आवश्यक तसल्ली और राहत दी। उसकी बातों से वह आश्वस्त हो गई कि वह चाहे बीमार थी पर वह महत्वपूर्ण व्यक्ति थी। वह उसके ''विश्वास'' की तारीफ़ करता रहा। उसकी बीमारी को चंगा करने की यीशु की सामर्थ में उसके विश्वास ने उससे यह कार्य, उसके वस्त्र को छूने का करवाया। परिणाम यह हुआ कि वह परमेश्वर द्वारा ''चंगी हो गई।'' मरकुस 5:29 और लूका 8:44 संकेत देते हैं कि स्त्री को यीशु के वस्त्र की झालर छूते ही चंगाई मिल गई थी। यूनानी शब्द (*sōizō*) जिसका अनुवाद ''चंगी हो गई'' हुआ है, आम तौर पर आत्मिक उद्धार से सम्बन्धित संदर्भों में उसका अनुवाद ''उद्धार'' होता है। यहां इसका इस्तेमाल थोड़ा सा विश्वास और उद्धार के बीच सम्बन्ध का सुझाव दे सकता है।

यीशु द्वारा स्त्री को चंगाई देने के बाद, उन्हें और लोग मिले, शायद याईर के घर के सेवक, जो उन्हें यह बता रहे थे कि बच्ची मर चुकी है (मरकुस 5:35)। यीशु ने उनकी बातें सुनीं और याईर से आग्रह किया, ''मत डर; केवल विश्वास रख'' (मरकुस 5:36)। फिर वह समूह याईर के घर की ओर चल पड़ा; परन्तु यहां पर यीशु ने अपने निकटतम चेलों पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ चलने की अनुमति दी (मरकुस 5:37)।

आयत 23. जब वे **उस सरदार के घर** पहुंचे तो **यीशु** को एक **भीड़** मिली और लड़की की मृत्यु का संकेत देते बांसुरी बजाने वालों का शोर सुनाई दिया। जनाज़ों के लिए आम तौर पर पेशेवर शोक करने वाले लाए जाते थे; इनमें **बांसुरी बजाने वाले** और विलाप करने वाली स्त्रियां होती थीं (यिर्मयाह 9:17, 18; 48:36; आमोस 5:16)।[8] रब्बियों की एक परम्परा कहती है कि निर्धन से निर्धन इस्राएली आदमी से भी, उसकी पत्नी की मृत्यु पर दो बांसुरी बजाने वाले और एक विलाप करने वाली स्त्री उसके लिए शोक करने के लिए दिहाड़ी पर लाने की उम्मीद की जाती थी।[9] यह तथ्य कि याईर एक प्रभावशाली आदमी था इस बात का पता देता है कि उसके घर में ऐसे **हुल्लड़ मचाते हुए** इतने शोक करने वाले क्यों जमा थे। बांसुरियां सरकंडे, बैंत और

हड्डियों की बनाई जाती थीं। उन्हें बनाना आसान होता था और सामान्य इस्तेमाल के लिए वे आसानी से लाई जा सकती थीं। बहुत बार, बांसुरी बजाना ''तालियां बजाने के साथ होता था।''[10]

आयत 24. शोक करने वाले लोग याईर के घर में जल्दी से जमा हो गए थे क्योंकि मर जाने वाले व्यक्ति का जनाज़ा उसी दिन कर दिया जाता था (प्रेरितों 5:5, 6, 10)। परन्तु यीशु ने यह कहते हुए कि **''हट जाओ, लड़की मरी नहीं, पर सोती है''** सब को घर से निकल जाने का आदेश दिया। लोग यह जानते हुए कि वह वास्तव में मर चुकी थी, इस बात पर **हंसी करने लगे** (9:18; मरकुस 5:35; लूका 8:49, 53)। यीशु के कहने का अर्थ इससे बढ़कर नहीं होगा कि वह मौत की नींद सो रही है और उसमें उसे जगाने की सामर्थ है। विलियम बार्कले ने व्याख्या की है:

> यह सम्भावना बहुत है कि जब यीशु ने कहा कि लड़की सोई हुई है, तो उसके कहने का अर्थ वही था जो उसने कहा। अंग्रेज़ी की तरह ही यूनानी भाषा में भी मृत व्यक्ति को आम तौर पर सोया हुआ ही कहा जाता है। वास्तव में *cemetery (स्मिटरी)* शब्द यूनानी भाषा के *koimētērion* से निकला है जिसका अर्थ है *वह स्थान जहां लोग सोते हैं।* यूनानी भाषा में *सोने के लिए* दो शब्द हैं; एक *koimasthai* है जिसका बहुत आम इस्तेमाल स्वाभाविक नींद और मृत्यु की नींद दोनों के लिए किया जाता है; दूसरा, *katheudein* जिसका इस्तेमाल मृत्यु की नींद के लिए इतना नहीं किया जाता, परन्तु जिसका अधिकतर इस्तेमाल स्वाभाविक नींद के लिए किया जाता है। इस आयत में इस्तेमाल किया गया शब्द *katheudein* है।[11]

जैक पी. लुईस ने लिखा है:

> नींद पुराने नियम से लिया गया आम तौर पर मृत्यु का नये नियम का विवरण है (*katheudein* के लिए; दानिय्येल 12:2; 1 थिस्सलुनीकियों 5:10; *koimaomai*: यूहन्ना 11:11; मत्ती 27:52; प्रेरितों 7:60; 1 कुरिन्थियों 15:6; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13–15)। रूपक में पुनरुत्थान की निश्चित्ता है। मृत्यु केवल अस्थाई है। इस नींद से केवल यीशु में जगाने की सामर्थ थी।[12]

आयत 25. विलाप करने वालों के कमरे में से चले जाने के बाद, इस आश्चर्यकर्म की गवाही के लिए यीशु, पतरस, याकूब और यूहन्ना के साथ लड़की के माता पिता वहीं थे (मरकुस 5:37, 40)। ''अपना हाथ उस पर रखने'' (9:18) की लड़की के पिता की पहले की गई विनती को पूरा करते हुए यीशु ने लड़की का हाथ पकड़ कर उसे उठाया। मत्ती उससे कहे यीशु के शब्दों को नहीं लिखता, परन्तु मरकुस 5:41 बताता है कि उसने कहा, '' 'तलीता कूमी!' कहा, जिसका अर्थ है, 'हे लड़की मैं तुझ से कहता हूं, उठ!' '' यह आरामी भाषा का वाक्यांश है जिसका मूल अनुवाद है, ''हे नन्हें मेमने, मैं तुझ से कहता हूं, उठ।''

जब यीशु ने उसे स्पर्श किया और ये शब्द कहे, तो **लड़की तुरन्त उठ गई** (देखें मरकुस 5:42)। लूका 8:55 इन शब्दों को जोड़ता है, ''*तब उसके प्राण फिर आए* और वह तुरन्त उठी; फिर उसने आज्ञा दी, कि उसे कुछ खाने को दिया जाए।''

लहू बहने वाली स्त्री के मामले की तरह ही यीशु एक बार फिर से अशुद्धता के सम्पर्क में आ गया; उसने मृत लड़की की लाश को छू लिया (गिनती 19:11-21)। दोनों मामलों में, अपने आपको अशुद्ध बनाने के बजाय यीशु ने चंगाई की अपनी सामर्थ के द्वारा उन्हें शुद्ध बना दिया। अपने से पूर्व के नबियों एलिय्याह और एलीशा की तरह (1 राजाओं 17:17-24; 2 राजाओं 4:17-37), और अपने बाद के प्रेरितों पतरस और पौलुस की तरह (प्रेरितों 9:36-42; 20:9-12), यीशु ने मुर्दों में जान डाल दी (9:25; लूका 7:11-17; यूहन्ना 11:38-46)। इस तथ्य ने कि यीशु ने मुर्दों को जिलाया लोगों के लिए मसीहा के चिह्न का काम किया (11:4, 5)। परन्तु इन सबसे बड़ा चिह्न उसका कब्र से अपना जी उठना था। याईर की बेटी का यह जिलाया जाना निश्चित रूप से आरम्भिक पाठकों के लिए ''उसके अपने जी उठने की परछाई'' का संदेश था।[13] जो लोग प्रभु में मर गए हैं वे केवल ''सो रहे'' हैं; क्योंकि उसके वापस आने पर वे जाग जाएंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:14, 15)।

आयत 26. यीशु ने वहां उपस्थिति लोगों को ''कड़े निर्देश'' दिए कि इस आश्चर्यकर्म का किसी को पता न चले (मरकुस 5:43; देखें लूका 8:56)। तौभी **इस बात की चर्चा उस सारे देश में फैल गई**। इस आश्चर्यकर्म को गुप्त रखना कठिन रहा होगा क्योंकि सब शोक करने वालों को पता था कि लड़की मर चुकी है। जब उन्होंने देखा कि वह फिर से जीवित हो गई तो यह खबर बड़ी तेज़ी से फैल गई कि यीशु के पास मृत्यु के ऊपर शक्ति है!

दो अंधों को चंगाई देना (9:27-31)

[27]जब यीशु वहां से आगे बढ़ा, तो दो अंधे उसके पीछे यह पुकारते हुए चले, ''हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।'' [28]जब वह घर में पहुंचा, तो वे अंधे उसके पास आए, यीशु ने उनसे कहा, ''क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं यह कर सकता हूं?'' उन्होंने उससे कहा, ''हां प्रभु।'' [29]तब उसने उनकी आंखें छूकर कहा, ''तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो।'' [30]और उनकी आंखें खुल गईं। यीशु ने उन्हें चिताकर कहा, ''सावधान, कोई इस बात को न जाने।'' [31]पर उन्होंने निकलकर सारे देश में उसका यश फैला दिया।

आयत 27. यीशु दया और चंगाई की ओर विनतियों से फिर से रुके बिना अधिक दूर नहीं जा पाया: **दो अंधे उसके पीछे यह पुकारते हुए चले, ''हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर!''**[14] अंधापन साफ़ सफ़ाई न होने, संक्रमण, हानिकारक जीवों, धूल मिट्टी पड़ जाने, दुर्घटना, लड़ाई के घावों, कुपोषण, जन्म की समस्याओं या अत्याधिक गर्मी के कारण हो सकता था।

''पुकारते हुए'' के लिए यूनानी शब्द (*krazō*) वह है जो यह पुकारने का सुझाव देता है। वे कम से कम दो कारणों से ऐसा कर रहे होंगे। स्पष्टतया वे उसका ध्यान खींचना चाहते थे। इसके अलावा वे भीड़ के ऊपर से सुनाई देने की कोशिश कर रहे होंगे। वे यीशु को उन पर ''दया करने'' के लिए पुकार रहे थे, जो मत्ती के विवरण में एक सामान्य विनती है (15:22; 17:15; 20:30, 31)। ये लोग स्पष्टतया यीशु के मसीहा होने को समझते थे, क्योंकि उन्होंने ''दाऊद की सन्तान'' शीर्षक का इस्तेमाल किया। यह आने वाले मसीहा के लिए सबसे सामान्य शीर्षकों में से एक था (1:1; 12:23; 15:22; 20:30, 31; 21:9, 15; 22:42; मरकुस 10:47, 48; 12:35;

लूका 18:38, 39; 20:41; देखें 2 शमूएल 7; भजन संहिता 89)।

इन लोगों द्वारा मसीहा के शीर्षक का इस्तेमाल करने के अलावा, यीशु द्वारा उनके अंधेपन को चंगा करने से उसके मसीहा होने की अपेक्षाओं की उसकी पूर्ति का संकेत मिलता है। डोनल्ड ए. हैग्नर ने ध्यान दिलाया है, ''अंधे की चंगाई [*tuphloi*] का उल्लेख सूची में पहले आता है जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के प्रश्न का उत्तर देता है कि यीशु ही प्रतिज्ञा किया हुआ अर्थात मसीहा है [या नहीं]'' (11:5)।''[15]

आयत 28. यीशु **घर में पहुंचा**, मान लें कि कफरनहूम में उस जगह जहां वह ठहरा हुआ था। दोनों अंधे यीशु के पीछे पीछे आ गए और उन्हें घर में बुला लिया गया। चाहे उन्होंने दया के लिए पुकार कर अपने विश्वास को दिखाया था (9:27), इसके बावजूद **यीशु ने** उन्हें परखा: **''क्या तुम में विश्वास है कि मैं यह कर सकता हूं?''** उनका त्वरित उत्तर था **''हां, प्रभु।''**

आयत 29. अंधे को चंगाई के अन्य मामलों में यीशु ने कुछ असामान्य बातें कीं (मरकुस 8:22-26; यूहन्ना 9:6, 7)। परन्तु इन दोनों के साथ उसने केवल **उनकी आंखें छूकर** उनसे कहा, **''तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो।''** एक बार फिर यीशु के स्पर्श की सामर्थ पर ज़ोर दिया गया (8:3, 15; 9:18, 20, 21, 25)। चंगाई के हर मामले में चाहे विश्वास आवश्यक नहीं है, परन्तु यीशु ने ऐसी ही बात कई बार की (देखें 8:13; 9:22)। हो सकता है कि यह व्यक्ति विशेष के समर्पण को परखने के उद्देश्य से हो। डी. ए. कार्सन ने प्रस्ताव दिया है कि यह ''उनके विश्वास को बढ़ाने और केन्द्रित करने का यन्त्र था।''[16]

आयतें 30, 31. उनकी आंखें खुल गईं का अर्थ केवल इतना है कि वे सुजाखे हो गए थे। इन लोगों के चंगा हो जाने के बाद, **''यीशु ने उन्हें चेताकर कहा सावधान कोई इस बात को न जाने!''** घर के अन्दर हो रहे आश्चर्यकर्म ने (9:28), गुप्त रखने का और अवसर दे दिया। फिर अपनी चंगाई के बारे में दूसरों को न बताने के यीशु के सख्त निर्देश के बावजूद, चंगाई पाने वालों ने **निकलकर सारे देश में उसका यश फैला दिया** (8:4; 9:26 पर टिप्पणियां देखें)।

दोनों अंधों ने हो सकता है कि उत्सुक्तावस यह खबर फैला दी हो या हो सकता है कि वे दूसरे बीमार लोगों को उस बड़े वैद्य के बारे में बताना चाहते हों। उनके कारण जो भी हों, खबर फैल जाना कि वे चंगे हो गए यीशु की आज्ञा का उल्लंघन था। उन्होंने वह न कर पाने पर जो यीशु ने उनसे करने कहा था उसकी करुणा का दाम चुका दिया।

दुष्टात्मा से पीड़ित एक गूंगे की चंगाई (9:32-34)

[32]जब वे बाहर जा रहे थे, तो देखो, लोग एक गूंगे को जिस में दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए; [33]और जब दुष्टात्मा निकाल दी गई, तो गूंगा बोलने लगा। इस पर भीड़ ने अचम्भा करके कहा, ''इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया।'' [34]परन्तु फरीसियों ने कहा, ''यह तो दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है।''

आयत 32. क्या दुष्टात्मा से पीड़ित इस व्यक्ति को यीशु के पास वे दो अंधे लेकर आए थे जिन्हें चगाई दी गई थी? वचन में कोई सुझाव नहीं है कि ऐसा हुआ हो; और इस पर संदेह है कि इतनी कठोर आज्ञा का उल्लंघन करने के बाद वे जल्दी से वापस आ गए। **जब वे बाहर**

जा रहे थे स्पष्टतया यीशु और उसके चेलों की बात कर रहा है, जिसकी पुष्टि सर्वनाम **उसके** से हो जाती है। यह निष्कर्ष निकालना अच्छा है कि यीशु के पास **गूंगे को जिसमें दुष्टात्मा थी** दूसरे लोग **लाए** थे।

गूंगे के लिए यहां इस्तेमाल शब्द (*kōphos*) वह शब्द है जिसमें बोलने की अयोग्यता (12:22) के साथ साथ बहरापन भी हो सकता है (11:5)। दोनों बातें आम तौर पर एक साथ ही होती हैं, क्योंकि जिसे सुनाई नहीं देता उसके लिए बातें करने सीखने में रुकावट पड़ सकती है। इस मामले में हम केवल इतना जाते हैं कि वह आदमी बोलने में असमर्थ था, क्योंकि आश्चर्यकर्म का परिणाम यह हुआ था कि ''गूंगा बोलने लगा'' (9:33)। उसकी खामोशी दुष्टात्मा से पीड़ित होने के कारण थी। दुष्टात्माएं गूंगेपन, बहरेपन, अंधेपन, अपने आपको घायल करना, शरीर को मरोड़ना, अकड़न, दांत पीसना और मुंह से फेन भर लेना सहित कई शारीरिक समस्याएं हो सकती थीं (12:22; मरकुस 1:26; 5:5; 9:18, 25)।

आयतें 33, 34. यीशु ने **जब दुष्टात्मा निकाल दी, तो गूंगा** तुरन्त बोलने लगा। लोगों की क्या प्रतिक्रिया थी। पहले तो, **भीड़ ने अचम्भा** किया। फिर कहने लगे, ''**इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया**।'' पुराना नियम आश्चयर्कमों से बेशक भरा हुआ है, परन्तु यीशु द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों की संख्या और विभिन्नता इस्राएल के इतिहास में सबसे बढ़कर थी। ''अचम्भा'' के लिए यूनानी शब्द (*thaumazō*) का अनुवाद ''विसमित'' होना भी हो सकता है जो भय के साथ चकित या भर जाने का संकेत देता है। यीशु के आश्चर्यकर्मों की गिनती और विभिन्नता बढ़ने के साथ लोगों का विसमित होना बढ़ता गया।

दूसरा, **फरीसियों** की प्रतिक्रिया आम यहूदी लोगों की प्रतिक्रिया से नाटकीय ढंग से अलग थी। उनका कहना था कि यीशु **दुष्टात्माओं के सरदार** अर्थात ''बालज़बूल'' की शक्ति से **दुष्टात्माओं को निकालता है** (देखें 12:24; मरकुस 3:22)। फरीसी यह कह रहे थे कि दुष्टात्माओं को निकालने की यीशु की योग्यता परमेश्वर या पवित्र आत्मा से नहीं, बल्कि शैतान से मिली थी। मत्ती 12:25-30 में यीशु ने उनके आरोप का उत्तर दिया:

> जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है; और कोई नगर या घराना जिस में फूट होती है, बना न रहेगा। और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उस का राज्य कैसे बना रहेगा? भला यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो तुम्हारे वंश किस की सहायता से निकालते हैं? ... जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है; और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिखेरता है।

फरीसियों के इस आरोप के पीछे उनका साफ़ इरादा यीशु के आश्चर्यकर्मों के ज़ोर पर आक्रमण करने का था। वे सीधे तौर पर आश्चर्यकर्मों पर आक्रमण नहीं कर सकते; क्योंकि आश्चर्यकर्म बहुत ही अधिक थे और भीड़ उसमें विश्वास उन्हीं के कारण करती थी। पर हमें आश्चर्य होता है कि लोग सचमुच उसमें विश्वास करते थे या केवल उसके आश्चर्यकर्मों में विश्वास करते थे।

फरीसी भीड़ की प्रतिक्रिया से डरते थे, जिस कारण उन्होंने यीशु को ही बदनाम करने की

कोशिश की। वह भी उसके आश्चर्यकर्मों को इनकार करके नहीं, बल्कि उन्हें बुरे स्रोत अर्थात ''दुष्टात्माओं के सरदार'' की ओर से होने की बात कहकर। यहां पर यीशु ने स्पष्टतया फरीसियों द्वारा लगाए गए आरोप को दरकिनार कर दिया और प्रचार का अपना मिशन जारी रखा। स्पष्टतया कम से कम यहां पर अपनी सेवकाई में उसने उनके आरोप को व्यक्तिग रूप से या अपनी सेवकाई के लिए खतरा नहीं माना।

यीशु के काम का सार (9:35-38)

[35]यीशु सब नगरों और गांवों में फिरता रहा और उनकी अराधनालयो में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

[36]जब उसने भीड़ को देखा तो उसको लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों की समार्न जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे। [37]तब उसने अपने चेलों से कहा, ''पके खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं। [38]इसलिए खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिए मजदूर भेज दे।''

9:35-38 के विषय में आर. टी. फ्रांस ने लिखा है:

> ये आयतें अध्याय 5-9 में यीशु की सेवकाई के सार के साथ साथ अध्याय 10 में चेलों को [सीमित] मिशन के परिचय की दोहरी भूमिका निभाती हैं। शब्दों को आगे और पीछे देखने और पुस्तक के दोनों भागों के बीच की निरन्तरता पर ज़ोर देने के लिए बड़े ध्यान से रखा गया है।[17]

आयत 35. अध्याय 5 से 9 को एक इकाई के रूप में बनाते हुए जिसमें यीशु की शिक्षा (अध्याय 5-7) और काम (अध्याय 8, 9) दोनों हैं, यह आयत 4:23 से लगभग उन्हीं शब्दों के साथ दोहराई गई है। परन्तु ''सारे गलील में'' को **सब नगरों और गांवों में** बदल दिया गया है। जोसेफ़स ने अनुमान लगाया है कि मसीह के समय के दौरान उस इलाके में 240 नगर और गांव थे।[18] यदि हम जोसेफ़स की गवाही को मान लें और यदि यीशु प्रतिदिन दो नगरों या गांवों में जाता था, तो उसे उन सब में जाने के लिए लगभग चार महीने लग गए होंगे। परन्तु हमें भाषा को अत्याधिक शाब्दिक होने पर ज़ोर नहीं देना चाहिए। सार वाक्य से संकेत मिलता है कि गलील में अपनी सेवकाई के दौरान यीशु ने और भी बहुत से काम किए और मत्ती ने अपने पाठकों के लिए वानगी देने के रूप में उसकी सेवकाई से चुनिन्दा कहानियां चुन ली हैं (देखें यूहन्ना 20:30, 31; 21:25)। नगरों और गांवों में घूमते हुए यीशु **उनकी अराधनालयो में ... राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा** (4:23 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 36. लोगों की भलाई की चिन्ता यीशु के दिल में थी। अन्य स्थानों पर हमें बताया गया है कि उसे उनकी शारीरिक भलाई की चिन्ता थी (14:13, 14; 15:30-32; 20:34), परन्तु यहां उसकी चिन्ता उनकी आत्मिक उन्नति के लिए थी। अनुवादित क्रिया शब्द **तरस आया** का

इस्तेमाल गहरी भावनाओं को दिखाने के लिए किया गया है; सम्बन्धित संज्ञा (*splanchna*) आंतड़ियों या आंतों के लिए है। **व्याकुल** के अर्थ वाला यूनानी क्रिया शब्द (*skullō*) जिसके अर्थ में परेशान होने या अत्यधिक कष्ट में होने का विचार मिलता है। लोग इस प्रकार से व्यवहार कर रहे थे जैसे वे बिना मंजिल के परिस्थितियों के रहमोकर्म पर चलते जा रहे थे। वे **भटके हुए** (*rhiptō*) भी थे। नये नियम में इस शब्द का इस्तेमाल आम तौर पर फैंकना के अर्थ के लिए हुआ है, परन्तु इसमें ''नीचे लेटना'' या ''नीचे रखे जाना'' का विचार भी हो सकता है। शायद, जैसे हैग्नर ने सुझाव दिया है, यह शब्द '' 'घबराया हुआ' या 'निढाल' जैसा अर्थ देने के लिए अलंकारिक अर्थ में इस्तेमाल किया गया'' है।[19]

यीशु ने लोगों के जन समूह को आत्मिक समझ से खाली और बिना अगुआई के देखा। उसने उन्हें **उन भेड़ों के समान जिनका कोई रखवाला न हो** बताया। यह विचार पुराने नियम में आम तौर पर मिलता है (गिनती 27:17; 1 राजाओं 22:17; 2 इतिहास 18:16; यशायाह 13:14; देखें यहेजकेल 34:5; जकर्याह 10:2; 11:5) और नये नियम में भी पाई जाती है (मत्ती 9:36; मरकुस 6:34)। पुराने नियम में चरवाहों और भेड़ों के रूपकों का इस्तेमाल आम तौर पर किया जाता था (भजन संहिता 23:1-6; 77:20; 78:52; 95:7; 100:3; यशायाह 40:11)। यीशु ने अपने सम्बन्ध में इसी रूपक का इस्तेमाल किया (यूहन्ना 10:11-16)। चरवाहे और उसकी भेड़ों के बीच एक नाजुक और निकट सम्बन्ध पाया जाता था; वह हरी चराइयों में उन्हें ले जाता, परभक्षियों से उनकी रक्षा करता और भटक जाने पर उन्हें ढूंढ़ता (लूका 15:3-7)। यीशु ''अच्छा चरवाहा'' था (यूहन्ना 10:11; देखें इब्रानियों 13:20; 1 पतरस 2:25; 5:4); परन्तु उस समय के मज़दूरों यानी फरीसियों, शास्त्रियों और रब्बियों ने अपने आपको बचाने के लिए उन्हें छोड़ते हुए झुण्ड को तोड़ दिया था।

आयतें 37, 38. फिर यीशु भेड़ों के रूपक से कटाई के रूपक में आ गया। **उसने अपने चेलों से कहा, ''पके खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं।''** सामरिया में एक बार जाने पर, उसने अपने चेलों से कहा था, ''अपनी आंखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो, कि वे कटनी के लिए पक चुके हैं'' (यूहन्ना 4:35)। उसने केवल ''खोए हुओं के लिए प्रार्थना'' करने को नहीं कहा था, बेशक ऐसा करने का निश्चय करना अच्छी बात है। इसके विपरीत उसने कहा, **''खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिए मजदूर भेज दे।''** यीशु के समय में, ''खेत का स्वामी'' वह व्यक्ति होता था जो मज़दूरों को दिहाड़ी पर रखता और उन्हें खेते में भेज देता था। यह व्यक्ति कटनी के लिए ठहराया गया इन्चार्ज, फोर्मैन या खेत का स्वामी स्वयं हो सकता था। यीशु के दृष्टांत में, दिहाड़ी पर मज़दूरों को रखने वाला खेत का स्वामी था जिसने उन्हें दाख की अपनी बारी में काम करने भेजा और दिन के अन्त में उन्हें मज़दूरी दी (20:1-16)। इस संदर्भ में परमेश्वर (या यीशु) को ''खेत के स्वामी'' के रूप में दिखाया गया है और उसका खेत यह संसार है। मज़दूर वे लोग हैं जो आत्माओं को राज्य में लाते हुए खुशखबरी का प्रचार करते हैं। कटनी का रूपक कहीं और अन्तिम न्याय के लिए इस्तेमाल किया गया है (3:12; 13:24-30, 36-43; प्रकाशितवाक्य 14:14-20)। मज़दूरों की कमी की बात करने के बाद यीशु ने कटनी के खेत में भेजने के लिए अपने चेलों में से कुछ को चुना (10:1)।

❖❖❖❖❖ सबक ❖❖❖❖❖

बाधाओं पर काबू पाना (9:20-22)

9:20-22 में यीशु के वस्त्र को छूने वाली स्त्री के लिए कई बाधाओं पर काबू पाना आवश्यक था। पहले तो उसने भीड़ को पार किया। भीड़ यीशु को ''दबा रही और गिर रही'' थी (लूका 8:45)। कोई संदेह नहीं कि और लोग भी थे जो धक्का मुक्की करते हुए उस तक पहुंचने के लिए जी तोड़ कोशिश कर रहे थे। दूसरा, उसने लोगों का अपमान और मज़ाक सह लिया; पर अपने भय को पार कर गई और यीशु के वस्त्र को छूने के योग्य होने के लिए उसके इतना निकट जाने के लिए, भीड़ में से निकल गई। तीसरा, उसने चंगा न होने की सम्भावना का सामना किया। उसके विश्वास ने उसे इन जोखिमों पर काबू पाने का साहस दिया (9:22)।

परमेश्वर की सामर्थ में विश्वास रखना (9:27-31)

दो अंधों ने यीशु को ढूंढ़ा क्योंकि वे उसे देखना चाहते थे। उसने उन से यह कहकर कि ''क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं यह कर सकता हूं?'' उनके विश्वास को परखा (9:28)। उन्होंने उसमें अपने विश्वास की पुष्टि की और उसने उन्हें आंखें दे दीं।

क्या हम सचमुच में आज परमेश्वर की सामर्थ में विश्वास रखते हैं? हर साल अमेरिकी लोग सफलता की प्रेरणा देने वाले कोर्सों पर बहुत धन खर्च करते हैं। इनमें से अधिकतर कोर्सों में लोगों को अपने आप में विश्वास रखना सिखाया जाता है। अपने आप में विश्वास रखने में कोई बुराई नहीं है; हमें अपने आप में विश्वास होना आवश्यक है। परन्तु कुछ समस्याएं इतनी बड़ी होती हैं कि हम उन्हें अपने आप सम्भाल नहीं सकते। आवश्यकता इस बात की है कि परमेश्वर की सामर्थ में हमें सहायता देने के लिए सफलता की प्रेरणा का कोर्स दिया जाए।

जब हम यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर हमारे द्वारा कार्य कर रहा है, तो कोई ऐसी बात नहीं है जो हम कर न सकें। पौलुस को विश्वास था कि वह जो कुछ भी करना चाहता है वह करने के लिए मसीह उसके द्वारा काम कर सकता है (इफिसियों 3:20; फिलिप्पियों 4:13)।

''क्या तुम्हें यह विश्वास है कि मैं यह कर सकता हूं?'' (9:27-31)

हमारे विश्वास का आकार हमारी सोच को तय करता है, और हमारी सोच हमारी आत्मिक विकास को तय करती है। जो व्यक्ति यह मानता है कि वह कुछ नहीं कर सकता वह उसके विश्वास से ऊपर नहीं जा पाएगा।

हमें अपने आपको याद दिलाना आवश्यक है कि हम वैसे नहीं सोचते जैसे परमेश्वर सोचता है (यशायाह 55:8)। एक बड़ी गलती तब होती है जब हम परमेश्वर के उद्देश्यों और अपेक्षाओं को पहले से मान लेते हैं। ''मुझे नहीं लगता कि परमेश्वर मुझसे यह उम्मीद करता है'' जैसी बातों से बचना चाहिए। हम परमेश्वर के ढंगों की परिस्थतियों को देखने के लिए कैसे आ सकते हैं? पहले तो हमें अपने दिमाग को बदलना होगा (रोमियों 12:1, 2)। फिर, परमेश्वर का दिमाग उसके वचन में दिखाया गया है, इसलिए हमें बाइबल का अध्ययन करना आवश्यक है।

तीन वचन जो बताते हैं कि हम अपने विश्वास के आकार को बढ़ाकर परमेश्वर की सोच

को और समझने के लिए क्या कर सकते हैं।

यीशु में विश्वास (9:27-31)। दोनों अंधों ने यीशु का पीछा किया और उसने उन पर तरस खाने की विनती की। उसने उनसे पूछा कि क्या उन्हें विश्वास है कि वह उन्हें सुजाखा कर सकता है, तो उनका उत्तर था ''हां, प्रभु'' (9:28)। फिर उसने उनकी आंखों को छूआ और कहा, ''तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिए हो'' (9:29)। तुरन्त, उन्हें दिखाई देने लगा।

आवश्यक नहीं कि चंगाई की हर घटना चंगाई पाने वाले के विश्वास पर निर्भर हो। उस लंगड़े आदमी के उदाहरण के साथ जिसे यीशु के पास उसके चार मित्र लाए थे, सूबेदार के सेवक और गदारा के दुष्टात्माओं से पीड़ित आदमी का है।

परन्तु हो सकता है कि परमेश्वर के लिए हमारे उपयोगी होने की बात उसमें हमारे विश्वास के माप से तय हो। हमें यह मानना आवश्यक है कि वह जो कुछ स्वयं करना चाहता उसे हमारे द्वारा करने के योग्य है; परमेश्वर के लिए और हमारे लिए किसी भी बात से निपटना बड़ी बात नहीं है (19:26)।

आम तौर पर हम किसी वास्तविक या काल्पनिक योग्यता के कारण पीछे हट जाते हैं। उम्र, बीमारी और योग्यता की कमी रुकावटें हो सकती हैं; परन्तु ''अयोग्य'' होने की बात व्यक्ति तब बन्द करता है जब वह इस पर सोचना बन्द कर देता है कि वह क्या नहीं करता और यह सोचना आरम्भ करता देता है कि परमेश्वर की सामर्थ से वह क्या कर सकता है। ''आत्मिक रूप से अयोग्य'' होने की बात शारीरिक रूप से अपंग होने से कहीं बुरी है।

सफलता के परमेश्वर के आश्वासन से प्रेरणा लो (फिलिप्पियों 4:13)। पौलुस ने उसे पाने के लिए जो परमेश्वर चाहता है कि हमें मिले तीन पगों की योजना दी है। (1) ''मैं कर सकता हूं,'' (2) ''सब कुछ,'' (3) ''उसके द्वारा जो मुझ में सामर्थ देता है।'' पौलुस का विश्वास था कि परमेश्वर जो कुछ भी करना चाहता है वह उसके द्वारा कर सकता है।

परमेश्वर अपने राज्य में हमारी प्राप्तियों को सीमित नहीं करता। हम ही करते हैं! ''क्योंकि जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है'' (नीतिवचन 23:7)। यदि हम में परमेश्वर के राज्य में उपयोगिता की कमी की चिन्ता है, तो समस्या परमेश्वर की नहीं, हमारी अपनी सोच की है।

परमेश्वर की सामर्थ के हमारे द्वारा काम करने पर ध्यान लगाएं (इफिसियों 3:20)। हम इस वचन की बड़े ध्यान से समीक्षा करते हैं। ''अब उसकी'' परमेश्वर अर्थात इस संसार और इनमें की सब चीज़ों के सृष्टिकर्त्ता और सम्भालने वाले को कहा गया है। ''ऐसा सामर्थी है'' काम करने की परमेश्वर की शक्ति दिखाता है। ''कहीं अधिक'' का अर्थ ''नाप से बढ़कर, उम्मीद से कहीं बढ़कर'' है। ''हमारी विनती और समझ से'' संकेत देता है कि हम उससे अधिक नहीं मान सकते जितना परमेश्वर दे सकता है। हम काम करने की परमेश्वर की योग्यता से बढ़कर नहीं सोचते। हमारी सीमा केवल परमेश्वर की इच्छा और हमारे विश्वास हैं। ''उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है'' संकेत देता है कि परमेश्वर अपनी सामर्थ के साथ हमारे द्वारा काम करता है। यदि हम छोटा सोचें और योजना बनाएंगे तो हम छोटे ही होंगे। इसके विपरीत यदि हम बड़ा सोचे और बड़ी योजना बनाएं, तो हम बड़े काम कर सकते हैं। व्यक्तिगत मसीही के रूप में या मण्डली के रूप में हमारा विकास हमारे विश्वास से ही रुकता या बढ़ता है।

सारांश। यदि परमेश्वर हमारे द्वारा कुछ करना चाहता है, तो यह तभी हो सकता है जब हम इसे करने को तैयार और इच्छुक हों। हमारा विश्वास उसकी सेवा के लिए हमारी क्षमता को तय करता है।

कलीसिया का मिशन (9:35-38)

कलीसिया का मिशन ग्रेट कमीशन है (28:18-20; मरकुस 16:15, 16)। यह मिशन ''खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन पर उद्धार करना'' है (लूका 19:10)। कलीसिया के रूप में और हम जो कुछ भी करते हैं वह इस मिशन को पूरा करने का साधन है। आम तौर पर हम इस तथ्य को भूल जाते हैं।

यीशु हमारा नमूना है (1 पतरस 2:21)। ''नगरों और गावों में फिरता'' हुआ वह ''हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर'' करते हुए ''उनकी आराधनालयों में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार'' भी करता था (9:35)। उसका प्रचार और उपदेश का काम पहले था और उसके बाद हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करना था। इन आश्चर्यकर्मों का मुख्य उद्देश्य उसकी विश्वसनीयता को बनाना और उसके सुनाए संदेश को पक्का करना था। हम कहावत वाले टांगे को घोड़े के आगे न लगाएं। शरीर को भोजन और चंगाई देते हुए हम आत्मा को नहीं भूल सकते।

प्रभु की कटनी (9:37, 38)

आज भी फसल तो बहुत है पर मज़दूर थोड़े हैं। ''करोड़ों लोग जिन्होंने नहीं सुना आज भी वे बिना सुने हैं।'' अपने चेलों को प्रभु की आज्ञा आज के चेलों के लिए है। मार्शल कीबल कहा करते थे, ''हमें मिट्टी के निरीक्षक नहीं, बल्कि बीज बोने वाले होना आवश्यक है।'' इसी प्रकार से हमारी जिम्मेदारी उपज की गुणवत्ता निर्धारित करने की नहीं बल्कि जितना हो सके उतना अनाज इकट्ठा करने की है ताकि परमेश्वर को उसका भाग मिल सके। न्याय के दिन फल न लाने वाले और लावारिस पौधों को जड़ से उखाड़कर आग में डाल दिया जाएगा (13:24-30, 36-43; 15:13)।

टिप्पणियां

[1]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रिटेशन (लुईसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 105. [2]वही। [3]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 86. [4]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 1-13,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33ए (डलास: वर्ड बुक्स, 1993), 248. [5]एच. लियो बोल्स, *ए क्मैंट्री ऑन द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1936), 211. [6]विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री: एक्सापोज़िशन आफ़ द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 430. [7]*जौंडरवन इलस्ट्रेटेड बाइबल बैक्ग्राउंड्स कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक,* संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 2002), 65 में माइकल जे. विलकिन्स, ''मैथ्यू।'' [8]जोसेफस *वार्स* 3.9.5; मिशनाह *बाबा मेज़िया* 6.1. [9]मिशनाह *केतुबोथ* 4.4. [10]हैंड्रिक्सन, 432-33.

[11]विलियम बार्कले, द *गॉस्पल आफ़ मैथ्यू,* अंक 1, 2रा संस्क., द डेली स्टडी बाइबल (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1958), 353. [12]जैक पी. लुईस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 1, द लिविंग वर्ड कमैंट्री

(आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 140. [13]हेयर, 106. [14]यरीहो में ऐसी ही एक कहानी के लिए, देखें मत्ती 20:29-34; मरकुस 10:46-52; लूका 18:35-43. [15]हैग्नर, 252. [16]डी. ए. कारसन, *वेन जीज़स कन्फ्रंट्स द वर्ल्ड: एन एक्सपोज़िशन ऑफ़ मैथ्यू 8-10* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1987), 100. [17]आर. टी. फ्रांस, द *गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 174. [18]जोसेफस *लाइफ* 45. [19]हैग्नर, 260.